नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 13.04.2021

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में आज चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग तथा इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में **'जलियाँवाला बाग नरसंहार : एक ऐतिहासिक विशलेषण'** विषय पर आनलाइन विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रुप में बोलते हुए सी.एम.जी. कॉलेज प्रयागराज के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग की अध्यक्ष **डॉ. भावना चौहान** ने कहा कि इतिहास लेखन तथ्यपरक और निष्पक्ष तथा घटनाक्रम के सभी सम्बद्ध पक्षों और प्रश्नों पर समुचित प्रकाश डालनें वाला होना चाहिए। परन्तु भारतीय इतिहास लेखन के सन्दर्भ में पूर्णतः ऐसा नहीं हुआ। समय–समय पर राजनैतिक नेतृत्व एवं परिस्थितियाँ अनेकशः समग्र सत्य के कुछ पक्षों को उभारनें में और कुछ को दबाने में सहायक सिद्ध होते हैं। परिणामस्वरुप इतिहास और ऐतिहासिकता प्रभावित होती है। ब्रिटिश काल खण्ड में भारतीय इतिहास को न सिर्फ तोड़ा–मरोड़ा गया, अपितु उक्त काल में घटित होनें वाली घटनाओं को भी ब्रिटिशों द्वारा अपनी मानसिकता एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठतावाद के नजरिए से वर्णित किया गया। इन्ही घटनाओं में से एक प्रसिद्ध घटना अमृतसर के जलियाँवाला बाग की है, जिसकी क्रूर वास्तविकता को छिपाने के लिए तत्कालीन ब्रिटिश सत्ता ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

डॉ. भावना ने आगे कहा कि 13 अप्रैल 1919 ई0 को भारतीय इतिहास में घटित होनें वाली यह घटना अंग्रेजी काल की क्रूरता का बखान करने में सर्वतोभावेन समर्थ है। जलियाँवाला बाग में जनता शांतीपूर्ण तरीके से सिर्फ इस बात पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुई थी कि उनके नेता सैफुद्दीन किचलू तथा डॉ. सत्यपाल को किस अपराध के लिए अंग्रेजो ने गिरफ्तार किया है। जनता ने किसी भी प्रकार की नारेबाजी या हिंसा प्रदर्शन नहीं किया था। बावजूद इसके तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारी जनरल डायर नें मासूम जनता पर अंधाधुध फायरिंग कराना प्रारम्भ कर दिया। हजारों गोलियाँ चलीं, हजारों निर्दोष काल के गाल में समा गए। सम्भवतः प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ती के बाद यह पहली घटना थी जिसमें एक साथ इतने बड़े पैमाने पर नरसंहार को अंजाम दिया गया था। परन्तु तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों एवं स्वतंत्रता पश्चात् के कुछ वामपन्थी इतिहासकारों द्वारा बड़े पैमाने पर होने वाले इस नरसंहार की घटना को हत्याकांड कहकर इतिहास में समाविष्ट किया गया। अपनी व्यापक क्रूरता को छिपाने के लिए अंग्रेजों द्वारा किया गया यह ओछा कृत्य था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष **डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह** ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव यदि किसी एक घटना ने डाला था तो वह जलियाँवाला बाग नरसंहार की घटना थी। भारत में अंग्रेजी शासन के अंत की शुरुआत यही घटना बनीं। रोलैट एक्ट जैसे मानवता विरोधी एवं दमनकारी नीतियों का शांतीपूर्ण विरोध कर रहे जनता पर अंग्रेजी शासन द्वारा निर्ममतापूर्वक गोलियाँ चलवायी गई। 1000 से अधिक लोग मारे गए किन्तु सरकारी आंकड़े मृतकों की संख्या मात्र 384 बताते हैं। जबकि सच्चाई तो यह है कि गोलियों से बचने के लिए बाग स्थित कूएँ में बहुत से लोग कूद गये थे। 127 लाशें तो सिर्फ उस कूएँ से निकाली गई थी। भारतीय इतिहास का यह एक गौरवपूर्ण दिन था। इस घटना ने धीरे–धीरे भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की प्रबल अलख जगाई। भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन तेज हुआ। क्रांतिकारी

गतिविधियों में तेजी आयी और भगत सिंह जैसे सैकड़ों वीर क्रांतिकारी इसी घटना की उपज बनें। अंततः इसी घटना की प्रतिध्वनि ने 1947 ई. देश को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यक्रम की प्रस्ताविकी एवं संचालन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष **डॉ. सुबोध कुमार मिश्र** ने प्रस्तुत की। महाविद्यालय के फेसबुक पेज तथा यू–ट्यूब चैनल पर बड़ी संख्या में स्रोताओं द्वारा यह आनलाइन व्याख्यान देखा और सुना गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के सांस्कृतिक विभाग द्वारा एक **पोस्टर प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल **16** प्रतिभागियों ने कोरोना प्रोटोकाल का पूर्णतः पालन करते हुए प्रतिभाग किया तथा जलियाँवाला बाग नरसंहार की घटना से सम्बन्धित विविध प्रकार के मर्मस्पर्शी पोस्टर का निर्माण किया। प्रतियोगिता में बी.एड्. प्रथम वर्ष की **सुश्री नीलम गुप्ता** नें प्रथम, बी. एस–सी. द्वितीय वर्ष की **सुश्री भावना जायसवाल** ने द्वितीय तथा बी.एड्. द्वितीय वर्ष की **सुश्री ऐश्वर्या त्रिपाठी** नें तृतीय स्थान प्राप्त किया। बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष की सुश्री **सृष्टि श्रीवास्तव** तथा बी.ए. द्वितीय वर्ष की **सुश्री निशा कुमारी** को संयुक्त रुप से सांत्वना पुरस्कार दिया गया। प्रतियोगिता का संयोजन सांस्कृतिक विभाग की प्रभारी **सुश्री दीप्ती गुप्ता** ने किया जबकि **श्रीमती कविता मंध्यान, डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय** एवं **श्रीमती पुष्पा निषाद** नें निर्णायक मंडल के रुप में अपना सक्रिय योगदान दिया। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र देकर उत्साहवर्द्धन किया गया।

(डॉ. सुबोध कुमार मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी